

॥ धुंसा ॥

॥ ६५ ॥

सुखे जयो हो ॥ २ ॥ जैसे सुं न्य सरल घट मण्ड
वट नही ब्राध उपाध षषे ॥ तैसे ही कैवल्य शंश
अरो कीत ॥ व्यापक वीश्व वीसे नां धषे ॥ जयो
हो ॥ ३ ॥ सुस्मरु लकारण माहाकारण ॥ परम
कारण पद परम लषे ॥ तापर कैवल्य धां मसना
तंत ॥ कोई कजवर ला जान सके ॥ ४ ॥ जयो ही
अज हृद्य जहदा जहद्य लछं न लष ॥ षष नही तां
हां क्पां हां सुरतर षे ॥ सो तो सर्व वृत्ती तती तउ
तईत ॥ चैतं न इ ए जी नु जे ओ लषे ॥ जयो हो ॥ ५ ॥
अकल स्वरुप अषंडीत अनुसुत ॥ परस परे गु
रु लक्ष षषे ॥ अद्वैत आप्रमापमाप होई ना
सही वीश्व वीला सवी षे ॥ जयो हो ॥ ६ ॥ आद्य अं
त मध्य पुरस पुरं जन अं जन रही तनां भवीत भ
षे ॥ अद सुत वस्त सदी दीत सद पद ॥ ता अनुभव
रस संत चषे ॥ जयो हो ॥ ७ ॥ वार पार वीनु सही
तस मल पद ॥ वीमल वी लोक नरो कद षे ॥ सुध
संमर सरस उसद सुदसा सजा ॥ कुवेर सोये
तांणी सोड सषे ॥ जयो हो जं न हंसा कैवल्य जाप
जे ही पद अजर षषे ॥ जयो हो ॥ ८ ॥ इती श्री धुंन्य
संपुर्णः ॥ अथ आर्ती लीयते ॥ विहै ली आरती ये म
हुलासा ॥ सुरी नर मुनी जंन करत वीलासा ॥

आरतीकरतनीगमहरीदासा ॥ हरीहरीअगंम
 अगोचरअविगतवासा ॥ १ ॥ दुसरीआरतीदी
 रघसुरतकी ॥ वीष्णवकोटअनंतसुरतकी ॥ आ
 रतीकरतनीगंम ॥ २ ॥ तीसरीआरतीतरमव
 तोरे ॥ फरसरांमआइकरजीरे ॥ आरतीकरत
 ३ ॥ चौथीआरतीसकलचराचर ॥ कलमलजोस
 अषंडुपरापर ॥ आरतीकरत ॥ ४ ॥ पंचमीआर
 तीपरगटपरसीत ॥ नीरमलरूपनीरंतरदर
 सीत ॥ आरती ॥ ५ ॥ सतजुगत्रेहेतावापरकलजु
 ग ॥ सीरगुणरूपधरोहरीनीरगुण ॥ आरतीक
 रत ॥ ६ ॥ जुगजुगमांहरीधरतसरीरा ॥ साहेबकु
 वेरसंतनसुषसीरा ॥ आरतीकरतनीगमहरी
 दासा ॥ हरीहरीअगमअगोचरअवीगतवासा
 ७ ॥ इतीसाहेबकुवेरमाहाराजकीआरतीसंपुर्णः ॥
 अथअस्तुतीलीष्यते ॥ स्वस्वयंसदपदंसर्वमोक्ष
 नायकं ॥ अहीतंगअनुसुतंभववीतंईश्वरं ॥ १ ॥
 तत्ववेतायतद्वतं ॥ सांमृथायसाक्षीयं ॥ मंगला
 यमाहादगतं ॥ अहंनमामीयांणपते ॥ २ ॥ देवधी
 यंचैतनेगुदलोकंसहीतयंम ॥ व्यापीतंगवीश्व
 यंमअक्रेदंअनुरणे ॥ ३ ॥ नभगतंअनुभवेनवा
 रपारअंतयं ॥ अमल्लेषघ्नंनजयेजयेतीकुवेर